परमात्म ऊर्जा

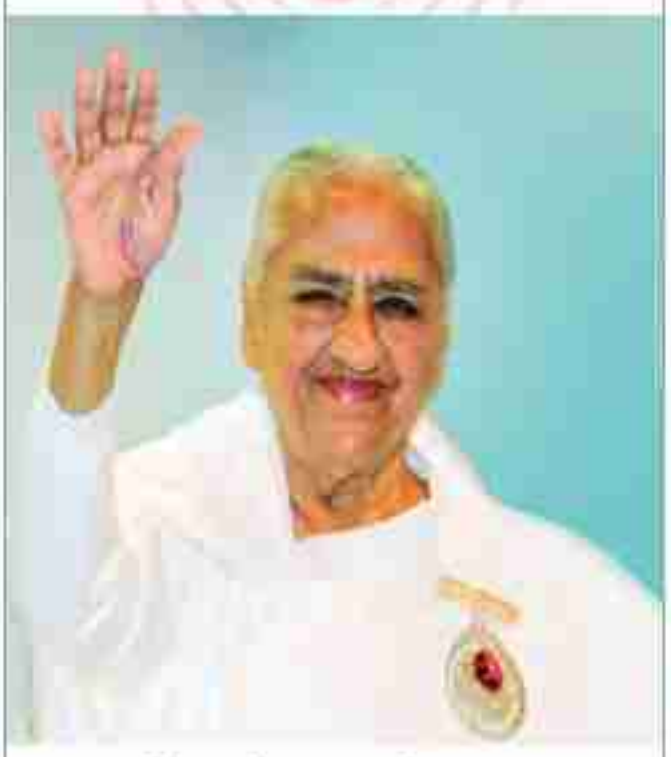

सदा हर्षित रहने के लिए कौन-सी सहज युक्ति है? सदा हर्षित रहने का यादगार रूप में कौन-सा चित्र है, जिसमें विशेष हर्षितमुख को ही दिखाया है? विष्णु का लेटा हुआ चित्र दिखाते हैं। ज्ञान को सिमरण कर हर्षित हो रहा है। विशेष, हर्षित होने का चित्र ही यादगार रूप में दिखाया हुआ है। विष्णु अर्थात् युगल रूप। विष्णु के स्वरूप आप लोग भी हो ना। नर से नारायण व नारी से लक्ष्मी आप ही बनने वाले हो या सिर्फ बाप बनते हैं? नर और नारी दोनों ही जो ज्ञान को सिमरण करते हैं वह ऐसे हर्षित रहते हैं। तो हर्षित रहने का साधन क्या हुआ? ज्ञान का सिमरण करना। जो जितना ज्ञान को सिमरण करते हैं वह उतना ही हर्षित रहते हैं।

ज्ञान का सिमरण ना चलने का कारण क्या है? व्यर्थ सिमरण में चले जाते हो। व्यर्थ सिमरण होता है तो ज्ञान का सिमरण नहीं होता। अगर बुद्धि को सदा ज्ञान के सिमरण में तत्पर रखो तो सदा हर्षित रहेंगे, व्यर्थ सिमरण होगा ही नहीं। ज्ञान का सिमरण करने के लिए सदैव हर्षित रहने के लिए खज़ाना तो बहुत मिला हुआ है। जैसे आजकल कोई बहुत धनवान होते हैं तो कहते हैं इनके पास तो अनगिनत धन है। ऐसे ही ज्ञान का खज़ाना जो मिला है वह गिनती कर सकते हो? इतना अनगिनत होते हुए फिर छोड़ क्यों देते हो? कोई कमी के कारण ही उस चीज़ का न होना सम्भव होता है। लेकिन कमी न होते भी चीज़ न हो, यह तो नहीं होना चाहिए ना। ज्ञान के खज़ाने से यह बातें ज्यादा अच्छी लगती हैं क्या? जैसे समझते हो कि यह बहुत समय की आदत पड़ी हुई है, इसलिए ना चाहते भी आ जाता है। तो अब ज्ञान का सिमरण करते हुए कितना समय हुआ है? संगम का एक वर्ष भी कितने के बराबर है? संगम का एक वर्ष भी बहुत बड़ा है। इसी हिसाब से देखो तो यह भी बहुत समय की बात हुई ना!

तो जैसे वह बहुत समय के संस्कार होने के कारण ना चाहते भी स्मृति में आ जाते हैं, तो यह भी बहुत समय की स्मृति नेचुरल क्यों नहीं रहती? जो नई बात व ताज़ी बात होती है वह तो और ही ज्यादा स्मृति में रहनी चाहिए, क्योंकि प्रेज़ेन्ट है ना। वह तो फिर भी पास्ट है। तो यह प्रेज़ेन्ट की बात है, फिर पास्ट क्यों याद आता? जब पास्ट याद आता है तो पास्ट के साथ-साथ यह भी याद आता है कि इससे प्राप्ति क्या होगी? जब उससे कोई भी प्राप्ति सुखदाई नहीं होती है तो फिर भी याद क्यों करते हो? रिज़ल्ट सामने होते हुए भी फिर भी याद क्यों करते हो? यह भी समझते हो कि यह व्यर्थ है। व्यर्थ का परिणाम भी व्यर्थ होगा ना। व्यर्थ परिणाम समझते भी फिर प्रैक्टिकल में आते हो तो इसको क्या कहा जाए?

मुंगरा बादशाहपुर-उ.प्र.। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर सार्वजनिक महाविद्यालय में आयोजित कार्यक्रम में योगाभ्यास करते हुए ब्र.कु. रजनी, योगा टीचर अंकाक्षा, सार्वजनिक महाविद्यालय के प्रबंधक उदयप्रताप सिंह, प्रधानाचार्य विनोद मिश्रा, डीडी कॉलेज के प्रधानाचार्य उदय प्रकाश सिंह तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें।

कथा सरिता

पुराने समय में एक राजा अपनी प्रजा को बहुत कष्ट देता था। राजा दूसरों का धन लूट लेता था। एक दिन गुरुनानक उस क्रूर राजा के राज्य में पहुंचे। जब ये बात राजा को मालूम हुई तो वह भी गुरुनानक से मिलने पहुंचा।

ईमानदारी का पाठ

शिष्यों ने गुरुनानक को राजा के बारे में सबकुछ बता दिया था। इसीलिए जब राजा उनके पास आया तो गुरुनानक ने उससे कहा कि राजन मेरी मदद करें, मेरा एक पत्थर अपने पास गिरवी रख लो। ये मुझे बहुत प्रिय है। इसका विशेष ध्यान रखना।

राजा ने कहा कि ठीक है, मैं इसे रख लेता हूं लेकिन आप इसे वापस कब ले जाएंगे? गुरुनानक ने जवाब दिया कि जब हमारी मृत्यु हो जाएगी और हम मृत्यु के बाद मिलेंगे तब ये पत्थर मुझे वापस कर देना।

राजा हैरान हो गया, उसने कहा कि ये कैसे संभव है? मृत्यु के बाद कोई भी अपने साथ कुछ कैसे ले जा सकता है?

गुरुनानक ने कहा कि जब आप ये बात जानते है तो आप प्रजा का धन लूटकर अपना खज़ाना क्यों भर रहे हैं?

राजा को गुरुनानक की बात समझ आ गई। उसने क्षमा मांगी और संकल्प लिया कि अब से वह अपनी प्रजा पर अत्याचार नहीं करेगा। इसके बाद से राजा ने अपने खज़ाने का उपयोग प्रजा की देखभाल में खर्च करना शुरू कर दिया।

सीख: हमें धन कमाने के लिए कभी भी गलत तरीके नहीं अपनाने चाहिए, क्योंकि कोई भी व्यक्ति मरने के बाद कुछ भी अपने साथ नहीं ले जा सकता। सबकुछ यहीं छोड़कर जाना होता है। इसीलिए धर्म के अनुसार काम करना चाहिए।

आगरा- आर्ट गैलरी म्यूज़ियम(उ.प्र.)। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर जिला प्रशासन, आयुष विभाग,उत्तरप्रदेश सरकार, ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में एकलव्य स्पोर्ट्स स्टेडियम,सदर बाज़ार,आगरा में इस वर्ष की थीम 'एक पृथ्वी, एक स्वास्थ्य के लिए योग' पर आयोजित कार्यक्रम में प्राणायाम के दौरान जयवीर सिंह,उत्तर प्रदेश के संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री, के.पी. सिंह,आयुष विभाग के योग गुरु, डॉ. एस.एस. आलम,क्षेत्रीय आयुर्वेदिक एवं यूनानी अधिकारी,आगरा, डॉ. प्रभात कुमार कुलश्रेष्ठ,जिला होम्योपैथ चिकित्सा अधिकारी, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. मधु, ब्र.कु. ममता, ब्र.कु. संगीता, ब्र.कु. साधना, ब्र.कु. सावित्री, ब्र.कु. रेखा, ब्र.कु. महावीर आदि की उपस्थिति रही।

बिजनी-असम। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित 'एक पेड़ माँ के नाम' कार्यक्रम में उपस्थित रहे म्युनिसिपैलिटी के चेयरमैन गुनेश्वर बसुमतारी, वार्ड काउंसिलर दीनानाथ दास, ब्र.कु. सुभद्रा तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें।

भरतपुर-कदमखण्ड(राज.)। बैंक मैनेजर नरेंद्र शर्मा को ज्ञानामृत पत्रिका भेंट करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सुनीता।

विकासनगर-हरबर्टपुर(उत्तराखंड)। विश्व तम्बाकू निषेध दिवस के अवसर पर आयोजित व्यसन मुक्ति जागरूकता रैली में सभा को सम्बोधित करते हुए सामाजिक कार्यकर्ता अतुल शर्मा। मंचासीन हैं ब्र.कु. तारा, डॉ. रजनीश चौहान, योगा टीचर रानी बंसल तथा अन्य।

झज्जर-हरियाणा। ए.डी.सी. जगनिवास को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. भावना। साथ हैं ब्र.कु. सविता।